The Eternal Epic of Divine Mother

दुर्गा सप्तशती

DURGA SAPTASHATI

Chapter 3: The Slaying of Mahishasura and His Generals

अध्याय ३: महिषासुर और उसके सेनापतियों का वध

Durga Saptashati

|| 'तृतीय अध्याय' ||

—

Numerology By Nehaa

Connect on WhatsApp for Consultation: 8802673153

यह अध्याय महिषासुर के सेनापतियों और अंततः महिषासुर के वध का वर्णन करता है।

चिक्षुर वध:

- दैत्य सेनापति चिक्षुर ने क्रोधित होकर देवी अम्बिका से युद्ध किया।
- देवी ने अपने बाणों से उसके घोड़ों, सारथि, धनुष और ध्वजा को नष्ट कर दिया।
- धनुष कटने पर, चिक्षुर ढाल-तलवार लेकर दौड़ा और सिंह तथा देवी की बायीं भुजा पर प्रहार किया, पर तलवार टूट गई।
- उसने शूल चलाया, जिसे देवी ने अपने शूल से टुकड़े-टुकड़े कर दिया, और महादैत्य चिक्षुर भी मारा गया।

अन्य सेनापतियों का वध:

- हाथी पर सवार चामर ने शक्ति से प्रहार किया, जिसे देवी ने हुँकार से निष्प्रभ कर दिया।
- उसने फिर शूल चलाया, जिसे देवी ने बाणों से काट डाला।
- देवी के सिंह ने हाथी पर चढ़कर चामर से बाहुयुद्ध किया और अंत में उसका सिर धड़ से अलग कर दिया।
- अन्य दैत्य - उदग्र, कराल, उद्धत, वाष्कल, ताम्र, अन्धक, उग्रास्य, उग्रवीर्य, महाहनु, विडाल, दुर्धर और दुर्मुख भी क्रमशः शिला, मुक्कों, गदा, भिन्दिपाल, बाणों, त्रिशूल और तलवार से देवी द्वारा मारे गए।

महिषासुर वध:

- अपनी सेना का संहार देखकर महिषासुर ने भैंसे का रूप धारण कर देवी के गणों को सताना शुरू किया।
- उसने अपने सींगों से पर्वतों को उठाकर फेंका और गर्जना की, जिससे पृथ्वी क्षुब्ध हो गई और समुद्र उमड़ने लगा।
- देवी चण्डिका ने क्रोधित होकर पाश से महिषासुर को बाँध लिया।
- बँधने पर उसने भैंसे का रूप छोड़कर सिंह का रूप लिया, फिर खड्गधारी पुरुष का रूप लिया, जिसे देवी ने बाणों से बींध दिया।
- फिर वह विशाल हाथी के रूप में परिणत हुआ, जिसकी सूँड देवी ने काट डाली।
- अंत में उसने फिर भैंसे का शरीर धारण किया और उपद्रव मचाने लगा।
- देवी उत्तम मधु का पान करके हँसने लगीं और महिषासुर को चेतावनी दी कि जब तक वह मधु पी रही हैं, तब तक ही वह गर्जना कर सकता है, इसके बाद देवता गर्जना करेंगे।
- यह कहकर देवी उछलीं और भैंसे के ऊपर चढ़कर अपने पैर से उसे दबाया और शूल से उसके कंठ में आघात किया।
- दबा होने पर भी महिषासुर भैंसे के मुख से आधे शरीर से बाहर निकलने लगा, पर देवी ने तलवार से उसका मस्तक काट गिराया।
- महिषासुर के मारे जाने पर दैत्यों की सेना भाग गई और देवताओं ने प्रसन्न होकर देवी का स्तवन किया।

Durga Saptashati
॥ तृतीयोऽध्यायः ॥

Chapter 3:

सेनापतियों सहित महिषासुर का वध

॥ ध्यान ॥

जगदम्बा के श्रीअङ्गो की कान्ति उदयकाल के सहस्रों सूर्यों के समान है। वे लाल रँग की रेशमी साड़ी पहने हुये हैं। उनके गले में मुण्डमाला शोभा पा रही है। दोनों स्तनों पर रक्त चन्दन का लेप लगा है। वे अपने कर-कमलों में जपमालिका, विद्या और अभय तथा वर नामक मुद्राएँ धारण किये हुये हैं। तीन नेत्रों में सुशोभित मुखारविन्द की बड़ी शोभा हो रही है। उनके मस्तक पर चन्द्रमा के साथ ही रत्नमय मुकुट बँधा है तथा वे कमल के आसन पर विराजमान हैं। ऐसी देवी को मैं भक्तिपूर्वक प्रणाम करता हूँ।

ऋषि कहते हैं - दैत्यों की सेना को इस प्रकार तहस-नहस होते देख महादैत्य सेनापति चिक्षुर क्रोध में भरकर अम्बिका देवी से युद्ध करने के लिये आगे बढ़ा॥

वह असुर रणभूमि में देवी के ऊपर इस प्रकार बाणों की वर्षा करने लगा, जैसे बादल मेरुगिरि के शिखरपर पानी की धार बरसा रहा हो॥

तब देवी ने अपने बाणों से उसके बाण समूह को अनायास ही काटकर उसके घोड़ों और सारथि को भी मार डाला॥ साथ ही उसके धनुष तथा अत्यन्त ऊँची ध्वजा को भी तत्काल काट गिराया। धनुष कट जाने पर उसके अङ्गों को अपने बाणों से बींध डाला॥

धनुष, रथ, घोड़े और सारथि के नष्ट हो जाने पर वह असुर ढाल और तलवार लेकर देवी की ओर दौड़ा॥

उसने तीखी धारवाली तलवार से सिंह के मस्तक पर चोट करके देवी की भी बायीं भुजा में बड़े वेग से प्रहार किया॥

राजन्! देवी की बाँह पर पहुँचते ही वह तलवार टूट गयी, फिर तो क्रोध से लाल आँखें करके उस राक्षस ने शूल हाथ में लिया॥ और उसे उस महादैत्य ने भगवती भद्रकाली के ऊपर चलाया। वह शूल आकाश से गिरते हुये सूर्यमण्डल की भाँति अपने तेज से प्रज्वलित हो उठा॥

उस शूल को अपनी ओर आते देख देवी ने भी शूल का प्रहार किया। उससे राक्षस के शूल के सैकड़ों टुकड़े हो गये, साथ ही महादैत्य चिक्षुर की भी धज्जियाँ उड़ गयीं। वह प्राणों से हाथ धो बैठा॥

महिषासुर के सेनापति उस महापराक्रमी चिक्षुर के मारे जाने पर देवताओं को पीड़ा देने वाला चामर हाथी पर चढ़कर आया। उसने भी देवी के ऊपर शक्ति का प्रहार किया, किन्तु जगदम्बा ने उसे अपने हुँकार से ही आहत एवं निष्प्रभ करके तत्काल पृथ्वीपर गिरा दिया॥

शक्ति टूटकर गिरी हुयी देख चामर को बड़ा क्रोध हुआ। अब उसने शूल चलाया, किन्तु देवी ने उसे भी अपने बाणों द्वारा काट डाला॥ इतने में ही देवी का सिंह उछलकर हाथी के मस्तक पर चढ़ बैठा और उस दैत्य के साथ खूब जोर लगाकर बाहुयुद्ध करने लगा॥

वे दोनों लड़ते-लड़ते हाथी से पृथ्वी पर आ गये और अत्यन्त क्रोध मे भरकर एक-दूसरे पर बड़े भयङ्कर प्रहार करते हुये लड़ने लगे॥

तदनन्तर सिंह बड़े वेग से आकाश की ओर उछला और उधर से गिरते समय उसने पंजों की मार से चामर का सिर धड़ से अलग कर दिया॥

इसी प्रकार उदग्र भी शिला और वक्ष आदि की मार खाकर रणभूमि में देवी के हाथ से मारा गया तथा कराल भी दाँतों, मुक्कों और थप्पड़ों की चोट से धराशयी हो गया॥

क्रोध में भरी हुयी देवी ने गदा की चोट से उद्धत का कचूमर निकाल डाला। भिन्दिपाल से वाष्कल को तथा बाणों से ताम्र और अन्धक को मौत के घाट उतार दिया॥

तीन नेत्रों वाली परमेश्वरी ने त्रिशूल से उग्रास्य, उग्रवीर्य तथा महाहनु नामक दैत्यों को मार डाला॥ तलवार की चोट से विडाल के मस्तक को धड़ से काट गिराया। दुर्धर और दुर्मुख - इन दोनों को भी अपने बाणों से यमलोक भेज दिया॥

इस प्रकार अपनी सेना का संहार होता देख महिषासुर ने भैंसे का रूप धारण करके देवी के गणों को त्रास देना आरम्भ किया॥

किन्हीं को थूथुन से मारकर, किन्हीं के ऊपर खुरों का प्रहार करके, किन्हीं-किन्हीं को पूँछ से चोट पहुँचाकर, कुछ को सींगों से विदीर्ण करके, कुछ गणों को वेग से, किन्हीं को सिंहनाद से, कुछ को चक्कर देकर और कितनों को निःश्वास- वायु के झोंके से धराशयी कर दिया॥

इस प्रकार गणों की सेना को गिराकर वह असुर महादेवी के सिंह को मारने के लिये झपटा। इससे जगदम्बा को बड़ाक्रोध हुआ॥

उधर महापराक्रमी महिषासुर भी क्रोध में भरकर धरती को खुरों से खोदने लगा तथा अपने सींगों से ऊँचे-ऊँचे पर्वतों को उठाकर फेंकने और गर्जने लगा॥

उसके वेग से चक्कर देने के कारण पृथ्वी क्षुब्ध होकर फटने लगी। उसकी पूँछ से टकराकर समुद्र सब ओर से धरती को डुबोने लगा॥

हिलते हुये सींगों के आघात से विदीर्ण होकर बादलों के टुकड़े-टुकड़े हो गये। उसके श्वास की प्रचण्ड वायु के वेग से उड़े हुये सैकड़ों पर्वत आकाश से गिरने लगे॥

इस प्रकार क्रोध में भरे हुये उस महादैत्य को अपनी ओर आते देख चण्डिका ने उसका वध करने के लिये महान् क्रोध किया॥

उन्होंने पाश फेंककर उस महान् असुर को बाँध लिया। उस महासंग्राम में बँध जाने पर उसने भैंसे का रूप त्याग दिया॥ और तत्काल सिंह के रूप में वह प्रकट हो गया। उस अवस्था में जगदम्बा ज्यों ही उसका मस्तक काटने के लिये उद्यत हुयीं, त्यों ही वह खड्गधारी पुरुष के रूप में दिखायी देने लगा॥

तब देवी ने तुरन्त ही बाणों की वर्षा करके ढाल और तलवार के साथ उस पुरुष को बींध डाला। इतने में ही वह महान् गजराज के रूप में परिणत हो गया॥

तथा अपनी सूँड से देवी के विशाल सिंह को खींचने और गर्जने लगा। खींचते समय देवी ने तलवार से उसकी सूँड काट डाली॥

तब उस महादैत्य ने पुनः भैंसे का शरीर धारण कर लिया और पहले की ही भाँति चराचर प्राणियों सहित तीनों लोकों को व्याकुल करने लगा॥

तब क्रोध में भरी हुयी जगन्माता चण्डिका बारम्बार उत्तम मधु का पान करने और लाल आँखें करके हँसने लगीं॥

उधर वह बल और पराक्रम के मद से उन्मत्त हुआ राक्षस गर्जने लगा और अपने सींगों से चण्डी के ऊपर पर्वतों को फेंकने लगा॥

उस समय देवी अपने बाणों के समूहों से उसके फेंके हुये पर्वतों को चूर्ण करती हुयी बोलीं। बोलते समय उनका मुख मधु के मद से लाल हो रहा था और वाणी लड़खड़ा रही थी॥

देवी ने कहा -॥ ओ मूढ़! मैं जब तक मधु पीती हूँ, तब तक तू क्षण भर के लिये खूब गर्ज ले। मेरे हाथ से यहीं तेरी मृत्यु हो जाने पर अब शीघ्र ही देवता भी गर्जना करेंगे॥

ऋषि कहते हैं -॥ यों कहकर देवी उछलीं और उस महादैत्य के ऊपर चढ़ गयीं। फिर अपने पैर से उसे दबाकर उन्होंने शूल से उसके कण्ठ में आघात किया॥

उनके पैर से दबा होने पर भी महिषासुर अपने मुखसे [दूसरे रूप में बाहर होने लगा] अभी आधे शरीर से ही वह बाहर निकलने पाया थी कि देवी ने अपने प्रभाव से उसे रोक दिया॥ आधा निकला होने पर भी वह महादैत्य देवी से युद्ध करने लगा। तब देवी ने बहुत बड़ी तलवार से उसका मस्तक काट गिराया॥

फिर तो हाहाकार करती हुयी दैत्यों की सारी सेना भाग गयी तथा सम्पूर्ण देवता अत्यन्त प्रसन्न हो गये॥ देवताओं ने दिव्य महर्षियों के साथ दुर्गा देवी का स्तवन किया। गन्धर्वराज गाने लगे तथा अप्सराएँ नृत्य करने लगीं॥

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेय पुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवी माहात्म्य में 'महिषासुरवध' नामक तीसरा अध्याय पूरा हुआ ॥

Durga Saptashati
॥ The Third Chapter ॥

Chapter 3:

The Slaying of Mahishasura, along with his Commanders

॥ **Meditation** ॥

The splendour of Jagadamba's divine limbs is like that of thousands of suns at the time of their rising. She is clad in a silken garment of red colour. A garland of skulls adorns Her neck. Her two breasts are smeared with red sandalwood paste. In Her lotus-hands, She holds a rosary, knowledge (book/manuscript), and the gestures (mudras) of fearlessness (Abhaya) and granting boons (Vara). Her lotus-face, adorned with three eyes, is exceedingly beautiful. A jewel-studded crown, along with the moon, is tied on Her head, and She is seated on a lotus-throne. I devoutly bow to such a Goddess.

The Rishi said - Seeing the army of the Asuras being thus destroyed, the great Asura commander Chikhshura, filled with rage, advanced to fight with Goddess Ambika.

That Asura started showering arrows upon the Goddess on the battlefield, just as a cloud pours streams of water upon the peak of Mount Meru.

Then the Goddess easily cut down his multitude of arrows with Her own arrows, and also killed his horses and charioteer. Simultaneously, She instantly cut down his bow and his exceedingly tall banner. When his bow was cut, She pierced his limbs with Her arrows.

With his bow, chariot, horses, and charioteer destroyed, that Asura

rushed towards the Goddess with a shield and a sword.

He struck the lion's head with his sharp-edged sword and also fiercely struck the left arm of the Goddess.

O King! As soon as that sword reached the arm of the Goddess, it broke. Then, that furious Rakshasa, with eyes red with anger, took a spear in his hand. And that great demon hurled it at the divine Bhadrakali. That spear blazed with its own energy, like the disc of the sun falling from the sky.

Seeing that spear coming towards Her, the Goddess also hurled a spear. That spear shattered the demon's spear into hundreds of pieces, and simultaneously, the great demon Chikhshura was also torn to shreds. He lost his life.

Upon the slaying of that mighty Chikhshura, the commander of Mahishasura, Chāmara, who tormented the gods, arrived riding an elephant. He also hurled a *shakti* (a weapon/javelin) at the Goddess, but Jagadamba merely disabled and rendered it powerless with Her *Hunkāra* (a fierce roar), instantly throwing it to the ground.

Seeing the *shakti* broken and fallen, Chāmara became extremely angry. Now he threw a spear, but the Goddess cut that too with Her arrows. Just then, the Goddess's lion leaped and mounted the elephant's forehead, and began a fierce hand-to-hand combat with that demon.

Fighting, the two fell from the elephant onto the ground and, filled with extreme rage, continued to fight, striking each other with terrible blows.

Thereafter, the lion leaped fiercely into the sky, and descending from there, it separated Chāmara's head from his torso with a strike

of its claws.

Similarly, Udagra was also slain by the Goddess on the battlefield, struck by blows from rocks and the chest, etc., and Karāla also fell to the ground from the impact of teeth, fists, and slaps.

The Goddess, filled with rage, crushed Uddhata with the blow of a mace. She sent Bāshkala to his death with a *Bhindipāla* (a type of sling or spear) and Tāmra and Andhaka with arrows.

The three-eyed Supreme Goddess killed the demons named Ugrāsya, Ugravīrya, and Mahāhanu with Her Trident (Trishūla). She severed Vidāla's head from his body with the blow of a sword. Durdhara and Durmukha - these two also, She sent to the abode of Yama with Her arrows.

Seeing the destruction of his army in this manner, Mahishasura took the form of a buffalo and began to torment the Goddess's attendants (Ganas).

He threw some down by striking with his snout, some by striking with his hooves, some by whipping with his tail, some by tearing with his horns, some by his speed, some by his roar, some by making them spin, and some by the blast of his exhaled breath.

Having thus felled the army of Ganas, that Asura rushed to kill the lion of the Great Goddess. This greatly angered Jagadamba.

On the other side, the mighty Mahishasura, also filled with rage, began to dig up the earth with his hooves, and started lifting and throwing high mountains with his horns, and roaring.

Due to the spinning velocity of his body, the earth became agitated and started to split. The oceans, struck by his tail, began to flood the earth from all sides.

Clouds were torn to pieces, rent by the impact of his shaking horns. Hundreds of mountains, tossed by the strong wind of his breath, began to fall from the sky.

Seeing that great demon, thus filled with rage, approaching Her, Chandi felt a tremendous wrath to slay him.

She threw a noose and bound that great Asura. Being bound in that great battle, he abandoned the form of a buffalo. And instantly, he appeared in the form of a lion. As Jagadamba was about to sever his head in that state, he immediately appeared as a sword-wielding man.

Then the Goddess instantly pierced that man, along with his shield and sword, with a shower of arrows. Just then, he transformed into a mighty elephant.

And he began to pull the Goddess's huge lion with his trunk and roar. As he was pulling, the Goddess cut off his trunk with a sword.

Then that great demon again assumed the body of a buffalo and, just as before, began to torment the three worlds, including all movable and immovable beings.

Then, the world-mother Chandi, filled with rage, repeatedly drank the excellent Madhu (wine) and began to laugh with red eyes.

Meanwhile, that demon, intoxicated by the pride of his strength and valour, roared and began to throw mountains at Chandi with his horns.

At that time, the Goddess pulverized the mountains thrown by him with Her multitude of arrows, and spoke. As She spoke, Her face was flushed with the intoxication of the Madhu, and Her voice was

slurring.

The Goddess said -॥ O fool! Roar to your heart's content for a moment, while I drink Madhu. After your death here by My hand, the gods too will soon roar with joy.

The Rishi said -॥ Saying this, the Goddess leaped and mounted that great demon. Then, pressing him down with Her foot, She struck his neck with a spear.

Even though pressed down by Her foot, Mahishasura began to emerge from his mouth [in another form]. He had only emerged halfway when the Goddess restrained him with Her power. Even though half-emerged, that great demon continued to fight with the Goddess. Then the Goddess severed his head with a very large sword.

Then, the entire army of demons fled, crying *hāhākara* (a sound of distress), and all the gods became exceedingly pleased. The gods, along with the divine Sages, praised Goddess Durga. The Gandharva kings began to sing, and the Apsaras began to dance.

Thus, in the Shrimārkandeya Purana, in the story of Sāvarnika Manvantara, the third chapter named 'Mahishasura-Vadha' (Slaying of Mahishasura) in Devi Mahatmya, is completed.

Numerology By Nehaa

Connect on WhatsApp for Consultation: 8802673153

Our Services

- Name Correction
- Lo Shu Grid reading
- Missing Number Remedies
- Business Name Correction
- Baby Name Correction
- Kundali Matching
- Lucky Mobile Number
- Lucky House Number
- Lucky Vehicle Number
- Home Vastu
- Office Vastu

Free Numerology Tools

- Numerology Name Calculator
- Lo Shu Grid Calculator
- Lucky Mobile Number Calculator
- Lucky Vehicle Number Calculator
- Numerology Kundali Matching Tool